अज़ : शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी

हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मोहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी

रिसाला नम्बर : 60

(तख़रीज शुदह)

बुरे ख़ातिमे के अस्बाब

नमाज़ में सुस्ती

मां बाप की ना फ़रमानी

शराब नोशी

मुस्लमानों को तकलीफ देना

झूट

ग़ीबत

ख़्वाब की बुन्याद पर किसी को काफिर नहीं कह सकते

कुत्तों की शक्ल में हश्र

अम्रद के साथ 70 शैतान

नाप तोल में कमी का अ़ज़ाब

शैतान वालिदैन के रूप में

अच्छे ख़ातिमे के लिये म-दनी फूल

अम्मीजान की बीनाई लौट आई

मक-त-बतुल मदीना®

सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, ख़ास बाज़ार, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1. गुजरात-इन्डिया
Ph: 91-79- 2539 11 68 E-mail : maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

مکتبۃ المدینہ

''बुरे ख़ातिमे के अस्बाब''

येह बयान **बुरे ख़ातिमे के अस्बाब** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानीए दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ का है, जिसे मजलिसे **मक्तबतुल मदीना** ने उर्दू में शाएअ़ फ़रमाया है। **मजलिसे तराजिम** (**दा'वते इस्लामी**) ने इस बयान को हिन्दी रस्मुल ख़त में **मक्त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

www.dawateislami.net

इस में अगर किसी जगह कमीबेशी पाए तो **मजलिसे तराजिम** को मुत्त़लअ़ फ़रमा कर स़वाब कमाइये।

राबित़ा:- ***मजलिसे तराजिम***
(दा'वते इस्लामी)
मक्त-बतुल मदीना®
अह़मदआबाद। **फ़ोन: 0091-79-2539 11 68**
Email : maktabahind@gmail.com

Sr. No.	786 फ़ेहरिस 92	Page No.
1	दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल	4
2	ख़्वाब की बुन्याद पर किसी को काफ़िर नहीं केह सकते	4
3	दुरूद की जगह ﷺ लिखना ना जाइज़ है	4
4	रिआ़यत का फ़ाइदा उठाइये	5
5	बुरे ख़ातिमें के चार अस्बाब	5
6	तीन उ़यूब की नुहूसत की हि़कायत	6
7	कुत्तों की शक्ल में ह़श्र	6
8	चुग़ली की ता'रीफ़	7
9	क्या हम चुग़ली से बचते हैं ?	7
10	ह़सद की ता'रीफ़	8
11	ह़सद की ता'रीफ़ का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा	8
12	सय्यिदी कुत़्बे मदीना की हि़कायत	8
13	दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी	9
14	रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा	9
15	अम्रद को शहवत से देखना ह़राम है	9
16	अम्रद के साथ सत्तर शैत़ान	10
17	ह़ज अदा न करना बुरे ख़ातिमे का सबब हैं	10
18	अज़ान के दौरान गुफ़्तुगू करने वाले के बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़	10
19	अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया	11
20	आग लपकती है	11
21	नाप तोल में कमी का अ़ज़ाब	11
22	एक शैख़ का बुरा ख़ातिमा	12
23	फ़िरिश्तों का साबेक़ा उस्ताज़	12
24	शैत़ान वालिदैन के रूप में	12
25	मौत की तकलीफ़ का एक क़त़रा	13
26	शैत़ान की दोस्तों की शक्ल में	13
27	हमारा क्या बनेगा ?	13
28	ज़बान क़ाबू में रखिये !	14
29	अच्छे ख़ातिमे के लिये म-दनी फूल	14
30	ईमान पर ख़ातिमे के चार अवराद	15
31	आग के सन्दूक़	15
32	सरकार ﷺ की गिर्या व ज़ारी	16
33	अम्मी जान बीनाई लौट आई	16

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

बुरे ख़ातिमे के अस्बाब[1]

आप को शैत़ान ग़ालिबन येह बयान नहीं पढ़ने देगा शैत़ान के ख़त़रनाक ह़म्लों की मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये अव्वल ता आख़िर इस रिसाले को पढ़ना बहुत ही मुफ़ीद है।

दुरूदे पाक न पढ़ने का वबाल

मन्क़ूल है, एक शख़्स को इन्तेक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में सर पर मजूसियों (या'नी आतश परस्तों) की टोपी पहने हुए देखा तो इस का सबब पूछा, उस ने जवाब दिया : जब कभी **मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक आता हैं **दुरूद शरीफ़** न पढ़ता था इस गुनाह की नुहूसत से मुझ से मा'रेफ़त और ईमान सल्ब कर लिये गए।

(सब्ए सनाबिल, स-फ़ह़ा:35, मक्तबए नूरिया र-ज़विय्या, सख्खर)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़्वाब की बुन्याद पर किसी को काफ़िर नहीं केह सकते

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ? गुनाहों की नुहूसत किस क़-दर भयानक है कि इस के सबब मौत के वक़्त ईमान बरबाद हो जाने का ख़त़रा रहता है। यहां येह ज़रूरी मस्अला ज़ेहन नशीन फ़रमा लीजिये कि किसी के बारे में **बुरा ख़्वाब** देखना बेशक बाइसे तश्वीश है ताहम ग़ैरे नबी का **ख़्वाब** शरीअ़त में हुज्जत या'नी दलील नहीं और फ़क़त ख़्वाब की बुन्याद पर किसी मुसल्मान को काफ़िर नहीं कहा जा सकता नीज़ मुसल्मान मय्यित पर **ख़्वाब** में कोई अ़लामते कुफ़्र देखने या ख़ुद मरने वाले मुसल्मान का ख़्वाब में अपने ईमान के सल्ब (बरबाद) होने की ख़बर देने से भी उस को **काफ़िर** नहीं केह सकते।

www.dawateislami.net

दुरू द की जगह ص लिखना ना जाइज़ है

सद्रुश्शरीअ़ा, बद्रुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِى फ़रमाते हैं : उ़म्र में एक मरतबा **दुरूद शरीफ़** पढ़ना फ़र्ज़ है और जल्सए ज़िक्र में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना वाजिब ख़्वाह ख़ुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने। अगर एक मजलिस में सौ बार ज़िक्र आए तो हर बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये। अगर नामे अक़्दस लिया या सुना तो **दुरूद शरीफ** उस वक़्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक़्त में उस के बदले का पढ़ ले। नामे अक़्दस लिखे तो **दुरूद शरीफ़** ज़रूर लिखे कि बा'ज़ उ़-लमा के नज़्दीक उस वक़्त **दुरूद** लिखना वाजिब है। **अक्सर लोग आजकल दुरूद शरीफ़** (या'नी मुकम्मल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लिखने) **के बदले** صلعم، عم، ؐ **लिखते हैं येह ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है।** यूंहीं رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की जगह رض, رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की जगह رح, लिखते हैं येह भी न चाहिये। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा:3, स-फ़ह़ा:101,102, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इस्मे मुबारक लिख कर उस पर "ج" न लिखा करें, عَزَّوَجَلَّ या ﷻ पूरा लिखिये।

---

1. येह 23 रबीउ़ल ग़ौस सिने 1419 हिजरी को शारजा ता आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची रीले हुवा था। ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरी त़ौर पर ह़ाज़िरे ख़िदमत है।

हर दम मेरी ज़बां पे दुरूदो सलाम हो
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

रिआ़यत का फ़ाइदा उठाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी जो आप ने हि़कायत सुनी इस में नामे अक़्दस पर **दुरूद शरीफ़** न पढ़ने वाले शख़्स के ख़ातिमे के मुतअ़ल्लिक देखे जाने वाले तश्वीशनाक ख़्वाब का बयान है। हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की ख़ुफ़िया तदबीर से डर जाना चाहिये और **दुरूद शरीफ़** पढ़ने में ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिये। आज से पहले हो सकता है बारहा ऐसा हुवा हो कि हमने नामे अक़्दस सुन कर या बोल कर **दुरूद शरीफ़** न पढ़ा हो। चूं कि येह रिआ़यत मौजूद है कि अगर उस वक़्त न पढ़े तो बा'द में भी पढ़ सकता है। लिहाज़ा अब पढ़ ले और आइन्दा कोशिश कर के उसी वक़्त पढ़ लिया करे वरना बा'द में पढ़ ले।

वोह सलामत रहा क़ियामत में
पढ़ लिये जिस ने दिल से चार[4] सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुरे ख़ातिमे के अस्बाब

शर्हुस्सुदूर में है, बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब हैं। (1) नमाज़ में सुस्ती (2) शराब नोशी (3) वालिदैन की ना फ़रमानी (4) मुसल्मानों को तकलीफ़ देना।

www.dawateislami.net

(शर्हुस्सुदूर, स-फ़ह़ा:27, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

जो इस्लामी भाई مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **नमाज़** नहीं पढ़ते या क़ज़ा कर के पढ़ते हैं, फ़ज्र के लिये नहीं उठते या बिला शर-ई मजबूरी के मस्जिद में बा जमाअ़त पढ़ने के बजाए घर ही पर नमाज़ पढ़ लेते हैं उन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिया है। कहीं नमाज़ में सुस्ती **बुरे ख़ातिमे का सबब** न बन जाए। इसी त़रह़ शराब ख़ोर, मां बाप का ना फ़रमान और मुसल्मानों को अपनी ज़बान या हाथ वग़ैरा से ईज़ा देने वाला सच्ची तौबा कर ले। **सदरुल** अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी علیہ رحمۃ اللہ الھادی फ़रमाते हैं : तौबा की अस्ल रुजूअ़ इलल्लाह (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रुजूअ़ करना) है इस के तीन रुक्न हैं एक ए'तिराफ़े जुर्म दूसरे नदामत तीसरे अ़ज़्मे तर्क (या'नी उस गुनाह को तर्क कर देने का पक्का इरादा) अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो इसकी तलाफ़ी (या नुक़्सान का बदला) भी लाज़िम है म-सलन तारिके सलात (या'नी बे नमाज़ी) की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स-फ़ह़ा:12, बम्बई) और अगर हुक़ूक़ुल इ़बाद तलफ़ किये हैं तो तौबा के साथ साथ उन की तलाफ़ी ज़रूरी है म-सलन मां बाप, बहन भाई, बीवी या दोस्त वग़ैरा की दिल आज़ारी की है तो उस से इस त़रह़ मुआ़फ़ी मांगे कि वोह मुआ़फ़ कर दे। सिर्फ़ मुस्करा कर SORRY केह देना हर मुआ़मले में काफ़ी नहीं होता !

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है हर वक़्त ताज़ा जुर्म है
ना तुवां के सर पे इतना बोझ भारी वाह वाह

तीन उ़यूब की नुहूसत की ह़िकायत

''मिन्हाजुल आ़बिदीन'' में है, ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुजैल बिन इयाज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने एक शागिर्द की नज़्अ़ के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर सूरए यासीन पढ़ने लगे। तो उस सागिर्द ने कहा : **सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो।**'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे कलिमा शरीफ़ की तल्क़ीन[1] फ़रमाई । **वोह बोला : मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढ़ूंगा मैं इस से बेज़ार हूं ।'' बल्कि इन्ही अल्फ़ाज़ पर उन की मौत वाक़ेअ़ हो गई ।** ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपने शागिर्द के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा। चालीस40 रोज़ तक अपने घर में बैठे रोते रहे। चालिस दिन के बा'द आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने **ख़्वाब** में देखा कि फ़िरिश्ते उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी मा'रेफ़त सल्ब फ़रमाई ? मेरे शागिर्दों में तेरा तो मक़ाम बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : **तीन उ़यूब** के सबब से : (1) **चुग़ली** कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कुछ और (2) **हसद** कि मैं अपने साथियों से हसद करता था (3) **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़-रज़ से त़बीब के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स-फ़ह़ा:165, मूअस्सिससतुस्सीरवान, बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठिये ! और घबरा कर अपने मा'बूदे बर ह़क़ को राज़ी करने के लिये उस की बारगाहे बेकस पनाह में झुक जाइये। आह ! **चुग़ली, ह़सद** और **शराबनोशी** के सबब वलिय्ये कामिल का शागिर्द कुफ़्रिय्या कलिमात बोल कर मरा। सद्रुश्शरीअ़ह बद्रुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मरते वक़्त مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुम्किन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बेहोशी में येह कलिमा निकल गया। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:4, स-फ़ह़ा:158, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची, दुर्रे मुख़्तार, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:96, दारुल मा'रेफ़ा, बैरूत)

कुत्तों की शक्ल में ह़श्र

अफ़्सोस ! आजकल **चुग़ली** इस क़-दर आ़म है कि अक्सर लोगों को शायद पता तक नहीं चलता कि मैं चुग़लख़ोरी कर रहा हूं। चुग़लख़ोरी आख़िरत के लिये तबाहकुन है। चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''ग़ीबत, त़ा'ना ज़नी, **चुग़लख़ोरी** और बे गुनाह लोगों के ऐ़ब तलाश करने वालों को **अल्लाह** तआ़ला (क़ियामत के दिन) **कुत्तों की शक्ल में उठाएगा।**'' (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:325, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत) एक ह़दीसे पाक में है, चुग़लख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा। (सह़ीहुल बुख़ारी, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:115, ह़दीस:6056, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

---

1. मरने के वाले को येह न कहा जाए कि कलिमा पढ़ बल्कि तल्क़ीन का सह़ीह़ त़रीक़ा येह है कि सकरात वाले के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा शरीफ़ का विर्द किया जाए ताकि उसे भी याद आ जाए।

चुग़ली की ता'रीफ़

मोहलिकात या'नी हलाक कर देने वाले गुनाहों से बचना ज़रूरी है और इन से बचने के लिये उ़मूमन इन की पहचान ज़रूरी होती है। यहां **चुग़ली की ता'रीफ़** पेश की जाती है, अ़ल्लामा ऐ़नी رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमाम नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ القَوِی से नक़्ल फ़रमाया कि किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़्सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना चुग़ली है।

(उ़म्दतु क़ारी तह़्तुल ह़दीस:216, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:594, दारुल फ़िक्र, बैरूत)

क्या हम चुग़ली से बचते हैं ?

अफ़्सोस ! अक्सर लोगों की गुफ़्तुगू में आजकल **ग़ीबत व चुग़ली** का सिल्सिला बहुत ज़ियादा पाया जाता है। दोस्तों की बैठक हो या मज़्हबी इज्तिमाअ़ के बा'द जमघट, शादी की तक़रीब हो या ता'ज़िय्यत कि निशस्त, किसी से मुलाक़ात हो या फ़ोन पर बात चन्द मिनट भी अगर किसी से गुफ़्तुगू की सूरत बने और दीनी मा'लूमात रखने वाला कोई ह़ुस्सास फ़र्द अगर उस गुफ़्तुगू की "तश्ख़ीस" करे तो शायद अक्सर मजालिस में दीगर गुनाहों भरे अल्फ़ाज़ के साथ साथ वोह दरजनों "चुग़लियां" भी साबित कर दे। हाए ! हाए ! हमारा क्या बनेगा !!! एक बार फिर इस ह़दीसे पाक पर ग़ौर कर लीजिये : "चुग़लख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।" काश ! हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में **ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना**[1] नसीब हो जाए, काश ! ज़रूरत के सिवा कोई लफ़्ज़ ज़बान से न निकले, ज़ियादा बोलनेवाले और दुन्यवी दोस्तों के झुरमट में रहने वाले का **ग़ीबत** और बिल ख़ुसूस **चुग़ली** से बचना बेह़द दुश्वार है। आह ! आह ! आह ! ह़दीसे पाक में है : "जिस शख़्स की गुफ़्तुगू ज़ियादा हो उस की ग़लतियां भी ज़ियादा होती हैं और जिस की ग़लतियां ज़ियादा हों उस के गुनाह ज़ियादा होते हैं और जिस के गुनाह ज़ियादा हों वोह जहन्नम के ज़ियादा लाइक़ है।"

www.dawateislami.net

(ह़िल्यतुल औलिया, जिल्द:3, स-फ़ह़ा:87-88, रक़्म:3278, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जो ज़ाइद गुफ़्तुगू को रोक ले और माल में से ज़ियादा को ख़र्च करे।"

(अल मो'जमुल कबीर, लित्त़बरानी, जिल्द:5, स-फ़ह़ा:71-72, दारे एह़याइत्तिरासुल अ़रबी, बैरूत)

एक सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : कोई शख़्स बा'ज़ अवक़ात मुझ से कोई ऐसी बात कर देता है कि उस का जवाब देना मुझे इस क़-दर पसन्द होता है जिस क़-दर प्यासे आदमी को ठंडा पानी भी पसन्द नहीं होता होगा। लेकिन मैं इस बात से डरते हुए जवाब देने से बा'ज़ रहता हूं कि कहीं येह फ़ुज़ूल कलाम ही न हो।

(इत्तिह़ाफ़ुस्सादतुल मुत्तक़ीन, जिल्द:9, स-फ़ह़ा:159, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वोह सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ तो फ़ुज़ूल गोई के ख़ौफ़ से जाइज़ जवाबी कारवाई से भी परहेज़ करें और हम किसी की बात की जब वज़ाह़ती कारवाई करने लगें तो न ग़ीबत छोड़ें न चुग़ली, न ऐ़ब दरी से बाज़ आएं न इल्ज़ाम तराशी से। हाए ! हाए ! हमारा क्या बनेगा ! **ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अ़क़्ले सलीम दे दे और हम गुनाहों भरी गुफ़्तुगू से बाज़ न आने

---

1. ग़ैर ज़रूरी बातोंसे बचने को दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ौल में ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाना केहते हैं।

वालों को ह़क़ीक़ी मा'नों में ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत में ह़सद की नुहूसत का भी तज़्किरा है। अफ़्सोस ! ह़सद का म-रज़ भी बहुत ज़ियादा फैल चुका है। ह़दीसे पाक में आता है : "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है।"

(सुनने इब्ने माजा, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:473, ह़दीस:4210, दारुल मा'रिफ़ा, बैरूत)

ह़सद की ता'रीफ़

ह़सद करने वाले को ह़ासिद और जिस से ह़सद किया जाए उस को मह़सूद केहते हैं। "लिसानुल अ़रब" जिल्द:3, स-फ़ह़ा:166 पर ह़सद की ता'रीफ़ यूं बयान की गई है :"

"اَلْحَسَدُاَنْ تَتَمَنّٰی زَوَالَ نِعْمَۃِ الْمَحْسُوْدِ اِلَیْكَ." या'नी ह़सद येह है कि तू तमन्ना करे कि मह़सूद की ने'मत उस से ज़ाइल हो कर तुझे मिल जाए।

ह़सद की ता'रीफ़ का आसान लफ़्ज़ों में ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ता'रीफ़ से मा'लूम हुवा कि किसी के पास कोई ने'मत देख कर तमन्ना करना कि काश ! इस से येह ने'मत छिन कर मुझे ह़ासिल हो जाए। म-सलन किसी की शोहरत या इ़ज़्ज़त से नफ़रत का जज़्बा रखते हुए ख़्वाहिश करना कि येह किसी त़रह़ ज़लील हो जाए और इस की जगह मुझे इ़ज़्ज़त का मक़ाम ह़ासिल हो जाए, नीज़ किसी मालदार से जल कर येह तमन्ना करना कि इस का किसी त़रह़ नुक़्सान हो जाए और येह ग़रीब हो जाए और मैं इस की जगह पर दौलत मन्द बन जाऊं। इस त़रह़ की तमन्ना करना ह़सद है। और مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ येह वबा काफ़ी फैल चुकी है, आजकल दूसरे का कारोबार ठप करने के लिये बड़ी जिद्दो जोहद की जाती है, उस के माल की ख़्वाह मख़्वाह ख़राबियां बयान कर के उस दुकानदार पर त़रह़ त़रह़ के इल्ज़ामात डाले जाते हैं और यूं ह़सद के सबब झूट, ग़ीबत, चुग़ली, आबरू रेज़ी और न जाने क्या क्या मज़ीद गुनाह किये जाते हैं। आह ! अब अक्सर मुसल्मानों में भाईचारा ख़त्म होता जा रहा है। पहले के मुसल्मान कितने भले इन्सान होते थे उस को इस ह़िकायत से समझिये :

सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना की ह़िकायत

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, शैख़ुल फ़ज़ीलत, सय्यिदुना व मौलाना व मुर्शिदुना **ज़ियाउद्दीन अह़मद क़ादिरी रज़वी** म-दनी अल मा'रूफ़ क़ुत़्बे मदीना رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तुर्कों के "दौरे ख़िदमत" से ही मदीनए मुनव्वरा زَادَھَااللہُ شَرَفًاوَّ تَعظِیْماً में मुक़ीम हो गए थे, तक़रीबन सतत्तर बरस वहां क़ियाम रहा और अब **जन्नतुल बक़ीअ़** में आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार है। आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! पहले के (ग़ालिबन तुर्कों के दौर के) अहले मदीना को आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कैसा पाया ? फ़रमाया : एक मालदार ह़ाजी साह़िब ग़ुरबा में कपड़ा तक़्सीम करने की ग़-रज़ से ख़रीदारी के लिये एक बज़्ज़ाज़ (या'नी कपड़ा बेचने वाले) की दुकान पर पहुंचे और मत़्लूबा कपड़ा काफ़ी मिक़्दार में त़लब किया। दुकानदार ने कहा : मैं आप का ऑर्डर पूरा तो कर

www.dawateislami.net

सकता हूं मगर मेरी दरख़्वास्त है कि आप सामने वाली दुकान से ख़रीद फ़रमा लीजिये क्यूंकि اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज मेरी अच्छी बिकरी हो गई है, उस बेचारे पड़ौसी दुकानदार का आज धंदा कुछ मंदा (या'नी कम हुवा) है। ह़ज़रते **सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : पहले के अहले मदीना ऐसे थे : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

दिल से दुन्या की उल्फ़त निकालो ! इस तबाही से मौला बचा लो
मुझ को दीवाना अपना बना लो, या नबी ताजदारे मदीना

दो अम्रद पसन्द मुअज़्ज़िनों की बरबादी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं त़वाफ़े का'बा में मश्ग़ूल था कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जो गिलाफ़े का'बा से लिपट कर एक ही दुआ़ की तकरार कर रहा था : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे दुन्या से मुसल्मान ही रुख़्सत करना।" मैं ने उस से पूछा : इस के इ़लावा कोई और दुआ़ क्यूं नहीं मांगते ? उस ने कहा : मेरे दो भाई थे, बड़ा भाई चालीस साल तक मस्जिद में बिला मुआ़वज़ा अज़ान देता रहा। जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने क़ुरआने पाक मांगा, हम ने उसे दिया ताकि इस से ब-र-कतें ह़ासिल करे, मगर क़ुरआन शरीफ़ हाथ में ले कर वोह केहने लगा : "तुम सब गवाह हो जाओ कि मैं क़ुरआन के तमाम ए'तेक़ादात व अह़कामात से बेज़ारी ज़ाहिर करता और नस्रानी (ईसाई) मज़हब इख़्तियार करता हूं।" फिर वोह मर गया। इस के बा'द दूसरे भाई ने तीस बरस तक मस्जिद में फ़ी सबीलिल्लाह عَزَّوَجَلَّ अज़ान दी। मगर उस ने भी आख़िरी वक़्त नस्रानी होने का ए'तिराफ़ किया और मर गया। लिहाज़ा मैं अपने ख़ातिमे के बारे में बेह़द फ़िक्रमन्द हूं और हर वक़्त ख़ातिमा बिल्ख़ैर की दुआ़ मांगता रहता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद मुअज़्ज़िन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया, कि तुम्हारे दोनों भाई आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह करते थे ? उस ने बताया, "वोह ग़ैर औ़रतों में दिलचस्पी लेते थे और अम्रदों (या'नी बेरीश लड़कों) को (शहवत से) देखते थे।"

(अर्रौज़ुल फ़ाइक़, स-फ़ह़ा:17, दारुल कुतुबिल इ़ल्मिय्या, बैरूत)

www.dawateislami.net

रिश्तेदार का रिश्तेदार से पर्दा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया ! क्या अब भी ग़ैर औ़रतों से बे पर्दगी और बे तकल्लुफ़ी से बाज़ नहीं आएंगे ? क्या अब भी ग़ैर औ़रतों नीज़ अपनी भाभी, चची, ताई, मुमानी (कि येह भी शरअ़न सब ग़ैर औ़रतें ही हैं इन) से अपनी निगाहों को नहीं बचाएंगे ? इसी त़रह़ चचाज़ाद, तायाज़ाद, मामूंज़ाद, फूफी ज़ाद और ख़ाला ज़ाद का नीज़ बीवी की बहन और बहनोई का आपस में पर्दा है। ना मह़रम पीर और मुरीदनी का भी पर्दा है। मुरीदनी अपने ना मह़रम पीर का हाथ नहीं चूम सकती।

अम्रद को शहवत से देखना ह़राम है

ख़बरदार ! अम्रद तो आग है आग ! अम्रद का क़ुर्ब, उस की दोस्ती उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचातानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अम्रद से दूर रहने ही में आ़फ़िय्यत है अगर्चे उस बेचारे का कोई क़ुसूर नहीं, अम्रद होने के सबब उस की दिल

आज़ारी भी मत कीजिये। मगर उस से अपने आप को बचाना बेहद ज़रूरी है। हरगिज़ अम्रद को स्कूटर पर अपने पीछे मत बिठाइये, ख़ुद भी उस के पीछे मत बैठिये कि आग आगे हो या पीछे उस की तपश हर सूरत में पहुंचेगी। शहवत न हो जब भी अम्रद से गले मिलना महल्ले फ़ित्ना (या'नी फ़ित्ने की जगह) है, और शहवत होने की सूरत में गले मिलना बल्कि हाथ मिलाना बल्कि फ़ुक़्हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : अम्रद की त़रफ़ शहवत के साथ देखना भी ह़राम है। (तफ़्सीराते अह़मदिया, स-फ़ह़ा:559, पिशावर) उस के बदन के हर ह़िस्से ह़त्ता कि लिबास से भी निगाहों को बचाइये। इस के तसव्वुर से अगर शहवत आती हो तो उस से भी बचिये, उस की तह़रीर या किसी चीज़ से शहवत भड़कती हो तो उस से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से नज़र की ह़िफ़ाज़त कीजिये, ह़त्ता कि उस के मकान को भी मत देखिये। अगर उस के वालिद या बड़े भाई वग़ैरा को देखने से उस का तसव्वुर क़ाइम होता है और शहवत चढ़ती है तो उन को भी मत देखिये।

अम्रद के साथ 70 शैत़ान

अम्रद के ज़रीए किये जाने वाले शैत़ाने अ़य्यारो मक्कार के तबाहकार वार से ख़बरदार करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है, औ़रत के साथ दो[2] शैत़ान होते हैं और अम्रद के साथ सत्तर।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द:23, स-फ़ह़ा:721)

बहरह़ाल अज्नबिय्या औ़रत (या'नी जिस से शादी जाइज़ हो) उस से और अम्रद से अपनी आंखों और अपने वुजूद को दूर रखना सख़्त ज़रूरी है वरना अभी आप ने इन दो भाइयों की अम्वात के तश्वीशनाक मुआ़मलात पढ़े जो ब ज़ाहिर नेक थे। महरबानी फ़रमा कर मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ मुख़्तसर रिसाला अम्रद पसन्दी की तबाहकारियां का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

नफ़्से बे लगाम तो गुनाहों पे उक्साता है
तौबा तौबा करने की भी आ़दत होनी चाहिये

ह़ज अदा न करना बुरे ख़ातिमे का सबब है

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे ह़ज करने से न ज़ाहिरी ह़ाजत मानेअ़ हुई न बादशाहे ज़ालिम न कोई ऐसा म-रज़ जो रोक दे फिर बिग़ैर ह़ज के मर गया तो चाहे यहूदी हो कर मरे या नस्रानी हो कर।"
(सुनने दारेमी, जिल्द:2, स-फ़ह़ा:45, ह़दीस:1785, बाबुल मदीना कराची) मा'लूम हुवा कि ह़ज फ़र्ज होने के बा वुजूद जिस ने कोताही की और बिग़ैर ह़ज अदा किये मर गया तो उस का बुरा ख़ातिमा होने का शदीद ख़त़रा है।

अज़ान के दौरान गुफ़्तुगू करने वाले का बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़

सद्रुश्शरीअ़ह, बद्रुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अम्जद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْقَوِی फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : जो अज़ान के वक़्त बातों में मश्ग़ूल रहे उस पर مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा:3, स-फ़ह़ा:41, मक्त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब अज़ान शरूअ़ हो तो बातें और दीगर काम काज मौक़ूफ़ कर के उस का जवाब देना चाहिये । हां अगर मस्जिद की त़रफ़ जा रहा है या वुज़ू कर रहा है तो चलते चलते और वुज़ू करते करते जवाब दे सकता है । जब पै दर पै अज़ानों की आवाज़े आ रही हों तो पहली अज़ान का जवाब दे देना काफ़ी है, अगर सब अज़ानों का जवाब दे तो बेहतर है । अज़ान का जवाब देने वालों की भी क्या ख़ूब बहारें हैं चुनान्चे "तारीख़े दिमिश्क़ जिल्द:40 स-फ़ह़ा:412 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक साह़िब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मौजूदगी में फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है । इस पर लोग मुतअ़ज्जिब हुए क्यूंकि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था । चुनान्चे एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन के घर गए और उन की बेवा से पूछा उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये, तो उन्हों ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह अज़ान सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे ।" (तारीख़े दिमिश्क़ लि इब्ने असाकर, जिल्द:40, स-फ़ह़ा:412,413, मुलख़्ख़सन दारुल फ़िक्र बैरूत) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो । अज़ान व जवाबे अज़ान के तफ़्सीली अह़कामात की मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ रिसाला फ़ैज़ाने अज़ान (32 स-फ़ह़ात) ज़रूर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

गुनहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे हैं लाख से हैं सिवा
मगर ऐ अ़फ़ू तेरे अ़फ़्व का तो ह़िसाब है न शुमार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आग लपकती है

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बीमार के सिरहाने तशरीफ़ लाए जो क़रीबुल मौत था । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कई बार उसे कलिमा शरीफ़ तल्क़ीन फ़रमाया, लेकिन वोह "दस ग्यारह, दस ग्यारह" की आवाज़ें लगाता रहा ! जब उस से इस की वजह पूछी गई तो कहा : मेरे सामने आग का पहाड़ है जब मैं कलिमा शरीफ़ पढ़ने की कोशिश करता हूं तो येह आग मुझे जलाने के लिये लपकती है । फिर आपने लोगों से पूछा : दुन्या में येह क्या काम करता था ? बताया गया कि येह सूदख़ोर था और कम तोला करता था ।

(तज़्किरतुल औलिया, स-फ़ह़ा:52-53, इन्तिशाराते गन्जीना, तेहरान)

नाप तोल में कमी का अ़ज़ाब

आह ! सूदख़ोरों और नाप तोल में कमी करने वालों की बरबादी ! चन्द सिक्कों की ख़ात़िर अपने आप को जहन्नम के शो'लों की नज़्र करने की जिसारत करने वालो ! सुनो ! सुनो ! रूहुल बयान में नक़्ल किया गया है : जो शख़्स नापतोल में ख़ियानत करता है । क़ियामत के

रोज़ उसे जहन्नम की गहराइयों में डाला जाएगा और दो पहाड़ों के दरमियान बिठा कर हुक्म दिया जाएगा, ''इन पहाड़ों को नापो और तोलो'' जब तोलने लगेगा तो आग उस को जला देगी।

(रूहुल बयान, जिल्द:10, स-फ़हा:364, कोइटा)

गर उन के फ़ज़्ल पे तुम ए'तेमाद कर लेते
ख़ुदा गवाह कि हासिल मुराद कर लेते

एक शैख़ का बुरा ख़ातिमा

हज़रते सय्यिदुना सुफ़ियान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ और हज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ दोनों एक जगह इकठ्ठे हुए। सय्यिदुना सुफ़ियान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ सारी रात रोते रहे। सय्यिदुना शैबान राई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : मुझे बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ रुला रहा है। आह! मैं ने एक शैख़ से चालीस साल इल्म हासिल किया। उस ने साठ साल तक मस्जिदुल हराम में इबादत की मगर उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा। सय्यिदुना शैबान राई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने कहा : ऐ सुफ़ियान! वोह उस के गुनाहों की शामत थी आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी हरगिज़ मत करना।

(सब्ए सनाबिल, स-फ़हा:34, मक्तबए नूरिय्या, र-ज़विय्या, सख्खर)

छुड़ा रंग दिल का छुड़ा धीरे धीरे — हिजाबाते जुल्मत हटा धीरे धीरे
कर आहिस्ता आहिस्ता ज़िक्रे इलाही — हो फिर मिद्हते मुस्तफ़ा धीरे धीरे

फ़िरिश्तों का साबिक़ा उस्ताज़

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है उस की ख़ुफ़िया तदबीर को कोई नहीं जानता, किसी को भी अपने इल्म या इबादत पर नाज़ नहीं करना चाहिये। शैतान ने हज़ारों साल इबादत की, अपनी रियाज़त और इल्मिय्यत के सबब मुअ़ल्लिमुल मलकूत या'नी फ़िरिश्तों का उस्ताज़ बन गया था लेकिन इस बदबख़्त को तकब्बुर ले डूबा और वोह काफ़िर हो गया। अब बन्दों को बेहकाने के लिये वोह पूरा ज़ोर लगाता है, ज़िन्दगी भर तो वस्वसे डालता ही रहता है मगर मरते वक़्त पूरी ताक़त सर्फ़ कर देता है किसी तरह बन्दे का बुरा ख़ातिमा हो जाए। चुनान्चे :

शैतान वालिदैन के रू प में

मन्क़ूल है : जब इन्सान नज़्अ़ के आ़लम में होता है दो शैतान उस के दाएं बाएं आ कर बैठ जाते हैं : दाईं तरफ़ वाला शैतान उस के वालिद का रूप धार कर केहता है : बेटा! देख मैं तेरा महरबान व शफ़ीक़ बाप हूं मैं तुझे नसीहत करता हूं कि तू नसारा का मज़हब इख़्तियार कर के मरना क्यूंकि वोही सब से बेहतरीन मज़हब है। बाईं जानिब वाला शैतान मरने वाले की मां की सूरत में आता है और केहता है : मेरे लाल! मैं ने तुझे अपने पेट में रखा, अपना दूध पिलाया और अपनी गोद में पाला है। प्यारे बेटे! मैं नसीहत करती हूं, यहूदी मज़हब इख़्तियार कर के मरना कि येही सब से आ'ला मज़हब है।

(अत्तज़्किरतुल क़ुरतबी, स-फ़हा:38, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत)

मौत की तकालीफ़ का एक क़त्रा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई बेहद तश्वीशनाक मुआ़मला है। बन्दा जब बुख़ार या दर्दे सर वग़ैरा में मुब्तला होता है तो उस से किसी बात में फ़ैसला करना दुश्वार हो जाता है। फिर नज़्अ़ की तकालीफ़ तो बहुत ही ज़ियादा होती हैं। "शरहुस्सुदूर" में है, अगर मौत की तकालीफ़ का एक क़त्रा तमाम आस्मानो ज़मीन में रहने वालों पर टपका दिया जाए तो सब मर जाएं। (शरहुस्सुदूर, स-फ़हा:32, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत) अब ऐसी नाज़ुक ह़ालत में जब मां बाप के रूप में शयात़ीन बहकाते होंगे उस वक़्त इन्सान को इस्लाम पर साबित क़दम रहना किस क़-दर दुश्वार हो जाता होगा। "कीमियाए सआ़दत" में है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : ख़ुदा की क़सम ! कोई शख़्स इस बात से मुत्मइन नहीं हो सकता कि मरते वक़्त उस का **इस्लाम** बाक़ी रहेगा या नहीं !

(कीमियाए सआ़दत, जिल्द:2, स-फ़हा:825, इन्तिशारात गन्जीना, तेहरान)

या रसूलल्लाह ! कहा था मरते दम क़ब्र में पहुंचा तो देखा आप हैं

शैत़ान दोस्तों की शक्ल में

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْوَالِی फ़रमाते हैं : सकरात के वक़्त शैत़ान अपने चेलों को मरने वाले के दोस्तों और रिश्तेदारों की शक्लों में ले कर आ पहुंचता है। येह सब केहते हैं, भाई ! हम तुझ से पहले मौत का मज़ा चख चुके हैं, मरने के बा'द जो कुछ होता है इस से हम अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ हैं। अब तेरी बारी है, हम तुझे हमदर्दाना मश्वरा देते हैं कि तू यहूदी मज़हब इख़्तियार कर ले कि येही दीन अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मक़्बूल है। अगर मरने वाला उन की बात नहीं मानता तो इसी त़रह़ दूसरे अह़बाब के रूप में शयात़ीन आ आ कर केहते हैं, तू नसारा का मज़हब इख़्तियार कर ले क्यूंकि इस मज़हब ने ह़ज़रत (मूसा) عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दीन को मन्सूख़ किया था। यूं ही शैत़ान अइज़्ज़ा व अक़रिबा की शक्ल में जमाअ़तें आ कर मुख़्तलिफ़ बात़िल फ़िक़्रों को क़बूल कर लेने के मश्वरे देती हैं। तो जिस की क़िस्मत में ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होना (या'नी फिर जाना) लिखा होता है वोह उस वक़्त डगमगा जाता और बात़िल मज़हब इख़्तियार कर लेता है। (अद दुर्रतुल फ़ाख़िरह फ़ी उ़लूमिल आख़िरह, स-फ़हा:511, मअ़हू मज्मूअ़ए रसाइले इमामे ग़ज़ाली, दारुल फ़िक्र बैरूत)

किसी और से हमें क्या ग़-रज़, किसी और से हमें क्या त़लब
हमें अपने आक़ा से काम है, न इधर गए न उधर गए

हमारा क्या बनेगा ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर करम फ़रमाए, नज़्अ़ के वक़्त न जाने हमारा क्या बनेगा ! आह ! हम बहुत गुनाह कर रखे हैं, नेकियां नाम को नहीं हैं, हम दुआ़ करते हैं ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ नज़्अ़ के वक़्त हमारे पास शयात़ीन न आएं बल्कि रह़मतुलिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم करम फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

नज़्अ़ के वक़्त मुझे जल्वए महबूब दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब

ज़बान क़ाबू में रखिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की ख़ुफ़िया तदबीर से हर मुसल्मान को लर्ज़ां व तर्सां रहना चाहिये, न जाने कौन सी मा'सिय्यत (या'नी ना फ़रमानी) अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के क़हरो ग़ज़ब को उभार दे और ईमान के लिये ख़त़रा पैदा हो जाए। बस हर वक़्त अपने रब عَزَّوَجَلَّ के आगे आ़जिज़ी का मुज़ाहरा करते रहिये। ज़बान को क़ाबू में रखिये कि ज़ियादा बोलते रहने से भी बा'ज़ अवक़ात मुंह से कलिमाते कुफ़्र निकल जाते हैं और पता नहीं लगता, हर वक़्त ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहना ज़रूरी है मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं, जिस को (ज़िन्दगी में) सलबे ईमान का ख़ौफ़ न हो नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सलब हो जाने का शदीद ख़त़रा है

(अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सा:4, स-फ़ह़ा:390, ह़ामिद एन्ड कम्पनी मर्कज़ुल औलिया लाहौर)

इलाही ! उन की महब्बत का घाव बाक़ी रहे
दरूने दिल पे सुलगता लाव बाक़ी रहे
गुनह का बार क़ियामत का बह़रे पुर आशूब
इलाही ! उन की शफ़ाअ़त की नाव बाक़ी रहे

www.dawateislami.net

अच्छे ख़ातिमे के लिये म-दनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तश्वीश.....तश्वीश.....निहायत ही सख़्त तश्वीश की बात है, हम नहीं जानते की हमारे बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़िया तदबीर क्या है, न मा'लूम हमारा ख़ातिमा कैसा होगा ! हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْوَالِى का फ़रमाने आ़ली है : बुरे ख़ातिमे से अम्न चाहते हो तो अपनी सारी ज़िन्दगी अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में बसर करो और हर हर गुनाह से बचो, ज़रूरी है कि तुम पर आ़रिफ़ीन जैसा ख़ौफ़ ग़ालिब रहे ह़त्ता कि इस के सबब तुम्हारा रोना धोना त़वील हो जाए और तुम हमेशा ग़मगीन रहो। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : तुम्हें अच्छे ख़ातिमे की तैयारी में मश्ग़ूल रहना चाहिये। हमेशा ज़िक्रुल्लाह में लगे रहो, दिल से दुन्या की महब्बत निकाल दो, गुनाहों से अपने आ'ज़ा बल्कि दिल की भी हिफ़ाज़त करो, जिस क़-दर मुम्किन हो बुरे लोगों को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर असर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेहन उस त़रफ़ माइल हो सकता है।

(एह़याउल उ़लूम, जिल्द:4, स-फ़ह़ा:219-221 मुलख़्ख़सन दारे सादिर, बैरूत)

मुसल्मां है अ़त्त़ार तेरी अ़त़ा से
हो इमान पर ख़ातिमा या इलाही

ईमान पर ख़ातिमे के चार अवराद

एक शख़्स बारगाहे आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ में ह़ाज़िर हो कर ईमान पर ख़ातिमा बिल ख़ैर के लिये दुआ़ का त़ालिब हुवा तो आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : (1) (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह़ को یَا حَیُّ یَا قَیُّوۡمُ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنۡتَ[1] अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ नीज़ (2) सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द सूरए काफ़िरून रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर सूरए काफ़िरून तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा **ईमान** पर होगा। और (3) तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ़ का विर्द रखें :

اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوۡذُبِکَ مِنۡ اَنۡ نُّشۡرِکَ بِکَ شَیۡئًا نَّعۡلَمُہٗ وَنَسۡتَغۡفِرُکَ لِمَا لَا نَعۡلَمُہٗ[2]

(अल मल्फ़ूज़, ह़िस्सा:234, ह़ामिद एन्ड कम्पनी, मर्कज़ुल औलिया लाहौर)

(4) بِسۡمِ اللّٰہِ عَلٰی دِیۡنِیۡ بِسۡمِ اللّٰہِ عَلٰی نَفۡسِیۡ وَ وُلۡدِیۡ وَ اَھۡلِیۡ وَ مَالِیۡ۔[3]

सुब्ह़ो शाम तीन तीन बार पढ़िये, **दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे** सब महफ़ूज़ रहें। (शजरए क़ादिरिय्या र-ज़विय्या, स-फ़ह़ा:12, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची) (ग़ुरूबे आफ़्ताब से सुब्ह़े सादिक़ तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है)

आग के सन्दूक़

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस किसी बद नसीब का कुफ़्र पर ख़ातिमा होगा उस को क़ब्र इस ज़ोर से दबाएगी कि इधर की पसलियां उधर हो जाएंगी। काफ़िर के लिये इसी त़रह़ और भी दर्दनाक अ़ज़ाब होंगे। क़ियामत का पचास हज़ार साला दिन सख़्त तरीन हौलनाकियों में बसर होगा, फिर उसे औंधे मुंह घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा। जो गुनहगार मुसल्मान दाख़िले जहन्नम हुए होंगे जब उन को निकाल लिया जाएगा और दोज़ख़ में सिर्फ़ वोही लोग रह जाएंगे जिन का कुफ़्र पर ख़ातिमा हुवा था फिर आख़िर में कुफ़्फ़ार के लिये येह होगा कि उस के क़द के बराबर आग के सन्दूक़ में उसे बन्द करेंगे, फिर उस में आग भड़काएंगे और आग का क़ुफ़्ल (या'नी ताला) लगाया जाएगा, फिर येह सन्दूक़ आग के दूसरे सन्दूक़ में रखा जाएगा और इन दोनों के दरमियान आग जलाई जाएगी और इस में भी आग का क़ुफ़्ल लगाया जाएगा, फिर इसी त़रह़ उस को एक और सन्दूक़ में रख कर और आग का क़ुफ़्ल लगा कर आग में डाल दिया जाएगा। और मौत को एक मेंढे की त़रह़ जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान ला कर ज़ब्ह़ कर दिया जाएगा। अब किसी को मौत नहीं आएगी। हर जन्नती हमेशा हमेशा के लिये जन्नत में और हर दोज़ख़ी हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में ही रहेगा। जन्नतियों के लिये मुसर्रत बालाए मुसर्रत

---

1. ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा क़ाइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू।
2. "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम इस से इस्तिग़्फ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते।"
3. अल्लाह तआ़ला के नाम की ब-र-कत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहलो माल की ह़िफ़ाज़त हो।

होगी और दोज़ख़ियों के लिये ह़सरत बालाए ह़सरत। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा अव्वल, स-फ़ह़ा:77, 91,92, मुलख़्ख़सन मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम तुझ से ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में म-दनी मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पड़ौस का सुवाल करते हैं।

पाया है वोह अल्त़ाफ़े करम आप के दर पर
मरने की दुआ़ करते हैं आप के दर पर

सब अ़र्ज़ व बयां ख़त्म है ख़ामोश खड़ा है
आ शफ़्ता है बदर आंख है नम आप के दर पर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से हरगिज़ मायूस नहीं हों। आप दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करते रहेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बना रहेगा। जब ज़ेहन बनेगा तो एह़सास पैदा होगा, रिक़्क़त मिलेगी, दुआ़ के लिये हाथ उठेंगे फिर اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में येह अ़र्ज़ करेंगे।

तूने इस्लाम दिया तू ने जमाअ़त में लिया
तू करीम अब कोई फिरता है अ़त़िय्या तेरा

सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गिर्या व ज़ारी

www.dawateislami.net

ज़रा धड़कते दिल पर हाथ रख कर सुनिये! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हम गुनहगारों के ईमान की सलामती की कितनी फ़िक्र है, चुनान्चे रूहुल बयान जिल्द : 10, स-फ़ह़ा: 315 में है : एक बार मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार में शैत़ान मक्कार रूप बदल कर हाथ में पानी की बोतल लिये ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : मैं लोगों को नज़्अ़ के वक़्त येह बोतल ईमान के बदले में फ़रोख़्त करता हूं। येह सुन कर आक़ाए नामदार, शफ़ीए रोज़े शुमार, उम्मत के ग़म ख़्वार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतना रोए कि अहले बैते अत़्हार भी रोने लगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वह़्य भेजी, ऐ मेरे मह़बूब! आप ग़म मत कीजिये! मैं ब ह़ालते नज़्अ़ अपने बन्दों को शैत़ान के मक्र से बचाता हूं।

(रूहुल बयान, जिल्द:10, स-फ़ह़ा:315, कोइटा)

हर उम्मती की फ़िक्र में आक़ा हैं मुज़्त़रिब
ग़म ख़्वार वालेदैन से बढ़ कर हुज़ूर हैं

अम्मी जान की बीनाई लौट आई

तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की तन्ज़ीमी तह़सील गुलशने बग़्दाद (बाबुल मदीना कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है : अम्मी जान (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) सुब्ह़ जब नींद से बेदार हुईं तो खुली आंखों के बा वुजूद उन्हें कुछ सुझाई न देता था हम ने घबरा कर डॉक्टर से रुजूअ़ किया तो पता चला कि "हाई ब्लड

प्रेशर'' के नतीजे में उन की आंखों के दिये बुझ गए हैं ! उन की बीनाई सल्ब हो गई । मुख़्तलिफ़ डॉक्टरों के पास पहुंचे मगर सभी ने मायूस किया ।

त़बीबों ने मरीज़े ला दवा केह केह के टाला है
बना, नाकाम इन का इन्दिया दो या रसूलल्लाह

अम्मी जान ने बड़े ए'तेमाद से फ़रमाया : ''मुझे म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ले जाओ اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वहां मुझे बीनाई मिल जाएगी ।'' चुनान्चे म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के वसीअ़ व अ़रीज़ तेह ख़ाने में इत्वार को दो पहर के वक़्त होने वाले हफ़्ता वार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हम दो बहनें अम्मी जान को सहारा दे कर ले आईं । वहां होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने हम को ख़ूब रुलाया । अम्मी जान पर बहुत ज़ियादा गिर्या त़ारी था । यकायक उन की आंखों में बिजली सी कूंद गई और म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना का फ़र्श साफ़ नज़र आने लगा फिर देखते ही देखते आंखें मुकम्मल रौशन हो गई ।

सुन्नत की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में — रह़मत की घटा छाई फ़ैज़ाने मदीना में
नाक़िस है जो सुनवाई, कमज़ोर है बीनाई — मांग आ के दुआ़ भाई फ़ैज़ाने मदीना में
आफ़त में घरा है गर, बीमार पड़ा है गर — आ कर ले दुआ़ भाई फ़ैज़ाने मदीना में

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُــوْبُــوْا اِلَــى اللّٰه ! اَسْتَغْفِرُاللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net